क्रेता-विक्रेता बैठक में देशभर के चावल व्यापारी करेंगे कारोबार पर विमर्श

- व्यापारी व विशेषज्ञों के ठहरने के लिए बुक किये गए हैं 75 कमरे
- बैठक में कालानमक के बाजार व प्रचार-प्रसार पर दिया जाएगा जोर

जागरण संवाददाता, सिद्धार्थनगर : बेसिक शिक्षा अधिकारी कार्यालय प्रांगण में 22-23 दिसंबर को आयोजित होने वाला क्रेता-विक्रेता बैठक (बायर-सेलर मीट) कालानमक के उत्थान के क्षेत्र में मील का पत्थर साबित होगा। इसमें देश के 20 राज्यों व प्रदेश के 75 जिलों के चावल व्यापारी आ रहे हैं। वह कालानमक के बाजार व प्रचार-प्रसार का शानदार खाका तैयार करेंगे। बैठक में इंटरनेशनल राइस रिसर्च इंस्टीट्यूट, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद से भी विशेषज्ञ आ रहे हैं। वह कालानमक के महत्व पर प्रकाश डालेंगे।

कालानमक को लेकर आयोजित होने वाला क्रेता-विक्रेता बैठक देशभर के लिए खास हो सके, इसके लिए पिछले ढाई माह से तैयारियां चल रही है। जिला मुख्यालय के सभी होटल, गेस्टहाउस बुक किये जा चुके हैं। यहां तक कि सिद्धार्थ विश्वविद्यालय का भी गेस्ट हाउस जिला प्रशासन ने 22-23 दिसंबर के लिए बुक कर लिया है। यहां से देश के सभी राज्यों में चावल पर काम करने वाले प्रमुख व्यापारियों को इस कार्यक्रम के लिए न्योता दिया गया है। इसमें 250 व्यापारियों ने कार्यक्रम आने के लिए अपनी सहमति दे दी है। कार्यक्रम के लिए दो जर्मन हैंगर टेंट की व्यवस्था की जा रही है। इसमें से एक में सेमिनार का आयोजन होगा तो दूसरे में कालानमक व उसके उत्पाद के 52 से अधिक स्टाल लगाए जाएंगे।

कालानमक धान की फसल • फाइल फोटो

पद्मश्री आरसी चौधरी भी होंगे विशेष मेहमानः कालानमक पर काम करने के डा.आरसी चौधरी को इसी वर्ष सरकार ने पद्मश्री देकर सम्मानित किया है। वह भी इस कार्यक्रम के विशेष मेहमान होंगे। इसके अलावा कृषि, कृषि शिक्षा व कृषि अनुसंधान विभाग के कैबिनेट मंत्री सूर्य प्रताप शाही, पद्मश्री भारत भूषण त्यागी समेत देश व प्रदेश स्तर के कृषि विशेषज्ञ भी इस कार्यक्रम में आ रहे हैं। यहां पर लैब के जरिये लोगों को यह भी जानकारी दी जाएगी कि कालानमक में कौन-कौन से पोषक तत्व मौजूद हैं। इससे कालानमक का एक आदर्श दर भी निर्धारित हो सकता है।

.बुद्ध के प्रसाद के रूप में भी है कालानमक की मान्यताः स्वाद, सुगंध व पोषक तत्वों के लिए अपनी विशेष पहचान रखने वाला कालानमक दुनिया में बुद्ध के प्रसाद के रूप में भी जाना जाता है।

18 हजार हेक्टेयर क्षेत्रफल में होती है कालानमक की खेती

30 हजार होता है कालानमक का उत्पादन

2018 में एक जिला एक उत्पाद में चयनित हुआ काला नमक

54 हजार से अधिक किसान करते हैं कालानमक की खेती

कालानमक के निर्यात को मिलेगा बढ़ावा

जिले में 18 हजार हेक्टेयर से अधिक क्षेत्रफल में कालानमक की खेती होती है। 30 हजार टन से अधिक इसका उत्पादन है, लेकिन अभी सिर्फ पांच टन ही कालानमक देश से बाहर जा पाता है। यह बड़े पैमाने पर निर्यात हो, इसके लिए बैठक आयोजित की जा रही है। देश के सभी प्रांतों से व्यापारी कार्यक्रम में आएंगे तो पूरे देश भर में इसकी मांग बढ़ेगी। इससे कालानमक का क्षेत्रफल भी बढ़ेगा।

22-23 दिसंबर को जिले में क्रेता-विक्रेता बैठक का आयोजन किया गया है। यह आयोजन कालानमक की ब्राडिंग व मार्केटिंग के लिए विशेष होगा। कालानमक सिद्धार्थनगर का एक जिला एक उत्पाद के तहत चयनित चावल है। बैठक का उद्देश्य इसकी खुशबू को दुनियाभर में फैलाना है। ताकि इसकी अधिक से अधिक मांग हो और किसानों को इसकी उचित कीमत मिले।

डा.राजा गणपति आर, जिलाधिकारी